भारतीय जनता पार्टी

वन्दे मातरम्

Publications of Nana Ji Deshmukh Library and Documentation Department

Bhartiya Janta Party J&K (UT)

1. " A Saga of Sacrifices" Praja Parishad Movement in Jammu & Kashmir.

2. जम्मू कश्मीर की संघर्ष गाथा प्रजा परिषद का इतिहास।

3. "100 Documents" A Reference Book of Jammu & Kashmir. (Releasing Soon).

4. Historical Journey of Bharatiya Janata Party. 1951-2011 (Hindi / Urdu / English)

5. Mission Accomplished.

6. A Compendium of Icons of Jammu & Kashmir And Our Inspiration.

7. Leadership Development Program.

8. A Bird Eye View of Praja Parishad

All readers, especially BJP Karyakartas, are requested to read all the Publications of Nana Ji Deshmukh Library and Documentation Department to know the first hand version of the history which has been so far distorted through the previous official publications.

With Regards
Ravinder Raina
(President)
Bhartiya Janta Party, J&K (UT).

प्रस्तावना

"भारतीय जनता पार्टी" का अस्तित्व भारतीय जनसंघ पर अधिष्ठित है। हमने भाजपा इतिहास विकास के सत्र में इसे समुचित रूप से जाना है। डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी भारतीय जन संघ के संस्थापक थे। भारत की अखण्डता के लिये उन्होंने जीवनोत्सर्ग किया। उनकी अद्भुत प्रतिभा एवं संकल्पवान निष्ठा हमें राजनैतिक कार्य-संस्कृति के उस मार्ग का दिग्दर्शन कराती है जो हम सबके लिये अपेक्षित है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय ज्ञान परम्परा में उत्पन्न युगऋषि थे। हमारे दल की विचारधारा के वे उन्नायक थे। उनका जीवन हम सबके लिए उत्प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक है।

"स्थापना से सुशासन"

स्थापना दिवस से सुशासन दिवस के कार्यक्रमों की संपूर्ण जानकरी एक पुस्तक के स्वरूप में कार्यकर्ताओं के लिए तैयार की गई है, यह एक सराहनीय कदम है इससे सभी कार्यकर्ताओं को पूरी जानकारी उपलब्ध होगी।

मैं नानाजी देशमुख ग्रंथालय तथा प्रलेखन विभाग की टीम के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि इस प्रकाशन से हर कार्यकर्ता को संपूर्ण जानकारी उपलब्ध होगी।

अशोक कोल

(प्रदेश संगठन महामंत्री)

(जम्मू कश्मीर केन्द्र शासित प्रदेश)

स्थापना दिवस

06 अप्रैल 1980

भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल है जो भारत को एक सुदृढ़, समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारत को एक समर्थ राष्ट्र बनाने के लक्ष्य के साथ भाजपा का गठन 6 अप्रैल, 1980 को नई दिल्ली के कोटला मैदान में आयोजित एक कार्यकर्ता अधिवेशन में किया गया जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी निर्वाचित हुए। अपनी स्थापना के साथ ही भाजपा ने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं लोकहित के विषयों पर मुखर रहते हुए भारतीय लोकतंत्र में अपनी सशक्त भागीदारी दर्ज की तथा भारतीय राजनीति को नए आयाम दिए। कांग्रेस की एकाधिकार वाली एक-दलीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था के रूप में जानी जाने वाली भारतीय राजनीति को भारतीय जनता पार्टी ने दो ध्रवीय बनाकर एक गठबंधन-युग के सूत्रपात में अग्रणी भूमिका निभाई है। देश में विकास आधारित राजनीति की नींव भी भाजपा ने विभिन्न राज्यों में सत्ता में आने के बाद तथा पूरे देश में भाजपा नीत राजग शासन के दौरान रखी। आज तीन दशक बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किसी एक पार्टी को देश की जनता ने पूर्ण बहुमत दिया है तथा भारी बहुमत से भाजपा नीत राजग सरकार केन्द्र में विद्यमान है।

पृष्ठभूमि

हालांकि भारतीय जनता पार्टी का गठन 6 अप्रैल, 1980 को हुआ, परन्तु इसका इतिहास भारतीय जनसंघ से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश विभाजन के साथ ही देश में एक नई

राजनीतिक परिस्थिति उत्पन्न हुई। गाँधीजी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाकर देश में एक नया राजनीतिक षड्यंत्र रचा जाने लगा। सरदार पटेल के देहावसान के पश्चात् कांग्रेस में नेहरू का अधिनायकवाद प्रबल होने लगा। गाँधी और पटेल दोनों के ही नहीं रहने के कारण कांग्रेस 'नेहरूवाद' की चपेट में आ गई तथा अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, लाइसेंस-परमिट-कोटा राज, राष्ट्रीय सुरक्षा पर लापरवाही, राष्ट्रीय मसलों जैसे कश्मीर आदि पर घुटनाटेक नीति, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारतीय हितों की अनदेखी आदि अनेक विषय देश में राष्ट्रवादी नागरिकों को उद्धिग्न करने लगे। 'नेहरूवाद' तथा पाकिस्तान एवं बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार पर भारत के चुप रहने से क्षुब्ध होकर डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने नेहरू मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। इधर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ स्वयंसेवकों ने भी प्रतिबंध के दंश को झेलते हुए महसूस किया कि संघ के राजनीतिक क्षेत्र से सिद्धांततः दूरी बनाये रखने के कारण वे अलग-थलग तो पड़े ही, साथ ही संघ को राजनीतिक तौर पर निशाना बनाया जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल की आवश्यकता देश में महसूस की जाने लगी। फलतः भारतीय जनसंघ की स्थापना 2 अक्टूबर, 1951 को डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में दिल्ली के राघोमल आर्य कन्या उच्च विद्यालय में हुई। भारतीय जनसंघ ने डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में [illegible]र एवं राष्ट्रीय अखंडता के मुद्दे पर आंदोलन छेड़ा तथा कश्मीर को किसी भी प्रकार का विशेषाधिकार देने का विरोध किया। नेहरू के अधिनायकवादी रवैये के फलस्वरूप डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी को कश्मीर की जेल में डाल दिया गया, जहाँ उनकी रहस्यपूर्ण स्थिति में मृत्यु हो गई। एक नई पार्टी को सशक्त बनाने का कार्य पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के कंधों पर आ गया। भारत-चीन युद्ध में भी भारतीय जनसंघ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा राष्ट्रीय सुरक्षा

पर नेहरू की नीतियों का डटकर विरोध किया। 1967 में पहली बार भारतीय जनसंघ एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में भारतीय राजनीति पर लम्बे समय से बरकरार कांग्रेस का एकाधिकार टूटा, जिससे कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की पराजय हुई।

भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय

सत्तर के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में निरंकुश होती जा रही कांग्रेस सरकार के विरुद्ध देश में जन-असंतोष उभरने लगा। गुजरात के नवनिर्माण आन्दोलन के साथ बिहार में छात्र आंदोलन शुरू हो गया। कांग्रेस ने इन आंदोलनों के दमन का रास्ता अपनाया। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार किया तथा देशभर में कांग्रेस शासन के विरुद्ध जन-असंतोषमुखर हो उठा। 1971 में देश पर भारत-पाक युद्ध तथा बांग्लादेश में विद्रोह के परिप्रेक्ष्य में बाह्य आपातकाल लगाया गया था जो युद्ध की समाप्ति के बाद भी लागू था। उसे हटाने की भी मांग तीव्र होने लगी। जनान्दोलनों से घबराकर इंदिरा गाँधी की कांग्रेस सरकार ने जनता की आवाज को दमनचक्र से कुचलने का प्रयास किया। परिणामतः 25 जून, 1975 को देश पर दूसरी बार आपातकाल भारतीय संविधान की धारा 352 के अंतर्गत आंतरिक आपातकाल के रूप में थोप दिया गया। देश के सभी बड़े नेता या तो नजरबंद कर दिये गए अथवा जेलों में डाल दिए गये। समाचार पत्रों पर 'सेंसर' लगा दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित अनेक राष्ट्रवादी संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हजारों कार्यकर्ताओं को 'मीसा' के तहत गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। देश में लोकतंत्र पर खतरा मंडराने लगा। जनसंघर्ष को तेज किया जाने लगा और भूमिगत गतिविधियाँ भी तेज हो गयीं। तेज होते जनान्दोलनों से घबराकर इंदिरा गाँधी ने 8 जनवरी 1977 को

लोकसभा भंग कर दी तथा नये जनादेश प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर एक नये राष्ट्रीय दल जनता पार्टी का गठन किया गया। विपक्षी दल एक मंच से चुनाव लडे तथा चुनाव में कम समय होने के कारण जनता पार्टी का गठन पूरी तरह से राजनीतिक दल के रूप में नहीं हो पाया। आम चुनावों में कांग्रेस की करारी हार हुई तथा जनता पार्टी एवं अन्य विपक्षी पार्टियाँ भारी बहुमत के साथ सत्ता में आई। पूर्व घोषणा के अनुसार । मई 1977 को भारतीय जनसंघ ने करीब 5000 प्रतिनिधियों के एक अधिवेशन में अपना विलय जनता पार्टी में कर दिया।

भाजपा का गठन

जनता पार्टी का प्रयोग अधिक दिनों तक नहीं चल पाया। दो-ढाई वर्षों में ही अंतर्विरोध सतह पर आने लगा। कांग्रेस ने भी जनता पार्टी को तोड़ने में राजनीतिक दांव-पेंच खेलने से परहेज नहीं किया। भारतीय जनसंघ से जनता पार्टी में आये सदस्यों को अलग-थलग करने के लिए दोहरी-सदस्यता का मामला उठाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध रखने पर आपत्तियाँ उठायी जानी लगीं। यह कहा गया कि जनता पार्टी के सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य नहीं बन सकते। 4 अप्रैल 1980 को जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति ने अपने सदस्यों के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य होने पर प्रतिबंध लगा दिया। पूर्व के भारतीय जनसंघ से संबद्ध सदस्यों ने इसका विरोध किया और जनता पार्टी से अलग होकर 6 अप्रैल 1980 को एक नये संगठन भारतीय जनता पार्टी की घोषणा की। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई।

भारत माता की जय

समरस्ता दिवस
(14 अप्रैल)

डा० भीमराव बाबासाहेब अम्बेडकर
14 अप्रैल 1891 – 6 दिसम्बर 1956

डा० भीमराव बाबासाहेब अम्बेडकर का मूल नाम भीमराव था। उनके पिता श्री रामजी वल्द मालोजी सकपाल महू में ही मेजर सूबेदार के पद पर एक सैनिक अधिकारी थे। अपनी सेवा के अंतिम वर्ष उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी भीमाबाई ने काली पलटन स्थित जन्मस्थली स्मारक की जगह पर विद्यमान एक बैरेक में गुजारे। सन् 1891 में 14 अप्रैल के दिन जब रामजी सूबेदार अपनी ड्यूटी पर थे, 12 बजे यहीं भीमराव का जन्म हुआ। कबीर पंथी पिता और धर्मपरायण माता की गोद में बालक का आरंभिक काल अनुशासित रहा।

शिक्षा बालक भीमराव का प्राथमिक शिक्षण दापोली और सतारा में हुआ। बंबई के एलफिन्स्टोन स्कूल से वह 1907 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। इस अवसर पर एक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया और उसमें भेंट स्वरुप उनके शिक्षक श्री कृष्णाजी अर्जुन केलुस्कर ने स्वलिखित पुस्तक 'बुद्ध चरित्र' उन्हें प्रदान की। बड़ौदा नरेश सयाजी राव गायकवाड की फेलोशिप पाकर भीमराव ने 1912 में मुबई विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा पास की। संस्कृत पढने पर मनाही होने से वह फारसी लेकर उत्तीर्ण हुये। अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय बी.ए. के बाद एम.ए. के अध्ययन हेतु बड़ौदा नरेश सयाजी

गायकवाड़ की पुनः फेलोशिप पाकर वह अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में दाखिल हुये। सन 1915 में उन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि की परीक्षा पास की। इस हेतु उन्होंने अपना शोध 'प्राचीन भारत का वाणिज्य' लिखा था। उसके बाद 1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय अमेरिका से ही उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की, उनके पी.एच.डी. शोध का विषय था 'ब्रिटिश भारत में प्रातीय वित्त का विकेन्द्रीकरण'।

योगदानः

भारत रत्न डा० बी. आर. अम्बेडकर ने अपने जीवन के 65 वर्षों में देश को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, औद्योगिक, संवैधानिक इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में अनगिनत कार्य करके राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, उनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं:- सामाजिक एवं धार्मिक योगदानः मानवाधिकार जैसे दलितों एवं दलित आदिवासियों के मंदिर प्रवेश, पानी पीने, छुआछूत, जातिपाति, ऊँच-नीच जैसी सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए मनुस्मृति दहन (1927), महाड सत्याग्रह (वर्ष 1928), नासिक सत्याग्रह (वर्ष 1930), येवला की गर्जना (वर्ष 1935) जैसे आंदोलन चलाये। बेजुबान, शोषित और अशिक्षित लोगों को जगाने के लिए वर्ष 1927 से 1956 के दौरान मूक नायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता और प्रबुद्ध भारत नामक पांच साप्ताहिक एवं पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। कमजोर वर्गों के छात्रों को छात्रावासों, रात्रि स्कूलों, ग्रंथालयों तथा शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से अपने दलित वर्ग शिक्षा समाज (स्था. 1924) के जरिये अध्ययन करने और साथ ही आय अर्जित करने के लिए उनको सक्षम बनाया। सन् 1945 में उन्होंने अपनी पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी के जरिए मुम्बई में सिद्धार्थ महाविद्यालय तथा औरंगाबाद में मिलिन्द महाविद्यालय की स्थापना की। बौद्धिक,

वैज्ञानिक, प्रतिष्ठा, भारतीय संस्कृति वाले बौद्ध धर्म की 14 अक्टूबर 1956 को 5 लाख लोगों के साथ नागपुर में दीक्षा ली तथा भारत में बौद्ध धर्म को पुनर्सृथापित कर अपने अंतिम ग्रंथ "द बुद्धा एण्ड हिज धम्मा" के द्वारा निरंतर वृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया।

अशिक्षित और निर्धान लोगों को जागरुक बनाने के लिया काम

उन्होंने मूक और अशिक्षित और निर्धन लोगों को जागरुक बनाने के लिये मूकनायक और बहिष्कृत भारत साप्ताहिक पत्रिकायें संपादित कीं और अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी करने के लिये वह लंदन और जर्मनी जाकर वहां से एम. एस सी., डी. एस सी., और बैरिस्टर की उपाधियाँ प्राप्त की। उनके एम. एस सी. का शोध विषय साम्राज्यीय वित्त के प्राप्तीय विकेन्द्रीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन और उनके डी.एससी उपाधि का विषय रूपये की समस्या उसका उद्भव और उपाय और भारतीय चलन और बैकिंग का इतिहास था।

संविधान तथा राष्ट्र निर्माण

उन्होंने समता, समानता, बन्धुता एवं मानवता आधारित भारतीय संविधान को 02 वर्ष 11 महीने और 17 दिन के कठिन परिश्रम से तैयार कर 26 नवंबर 1949 को तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को सौंप कर देश के समस्त नागरिकों को राष्ट्रीय एकता, अखंडता और व्यक्ति की गरिमा की जीवन पध्दति से भारतीय संस्कृति को अभिभूत किया। वर्ष 1951 में महिला सशक्तिकरण का हिन्दू संहिता विधेयक पारित करवाने में प्रयास किया और पारित न होने पर स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दिया। वर्ष 1955 में अपना ग्रंथ भाषाई राज्यों पर विचार प्रकाशित कर आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र को छोटे-छोटे और प्रबंधन योग्य राज्यों में

पुनर्गठित करने का प्रस्ताव दिया था, जो उसके 45 वर्षों बाद कुछ प्रदशों में साकार हुआ। निर्वाचन आयोग, योजना आयोग, वित्त आयोग, महिला पुरुष के लिये समान नागरिक हिन्दू संहिता, राज्य पुनर्गठन, बड़े आकार के राज्यों को छोटे आकार में संगठित करना, राज्य के नीति निर्देशक तत्व, मौलिक अधिकार, मानवाधिकार, काम्पट्रोलर व ऑडीटर जनरल, निर्वाचन आयुक्त तथा राजनीतिक ढांचे को मजबूत बनाने वाली सशक्त, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं विदेश नीति बनाई।

भारत माता की जय

बलिदान दिवस
(23 जून)
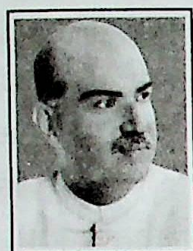
डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी
06 जुलाई 1901 – 23 जून 1953

राष्ट्रीयता के उद्घोषक प्रखर विद्वान थे । उनका आधुनिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में सम्मान किया जाता है। 33 वर्ष की उम्र में सन 1934 में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा उपकुलपति बने और उन्होंने यह दायित्व 1938 तक संभाला। उन्होंने विश्वविद्यालय में विज्ञान की शिक्षा को प्रोत्साहित किया और डा० एस. राधाकुष्णन् को बंगलोर से कलकत्ता प्राध्यापक के नाते आमन्त्रित किया। उन्होंने लगभग 22 विश्वविद्यालयों (जिनमें मद्रास, बनारस, आगरा और दिल्ली विश्वविद्यालय सम्मिलित हैं) में दीक्षान्त व्याख्यान दिये। डा० मुखर्जी भारत में महाबोधि समाज के संस्थापक अध्यक्ष और श्री अरविन्द के अनुयायी थे। श्रीमाँ आधुनिक भारत के निर्माता के नाते उनका समादर करती थीं और भारतीय राष्ट्रवाद को सशक्त करने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका मानती थीं। महात्मा गाँधी के सुझाव पर पं. जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें स्वातन्त्र्योत्तर भारत की प्रथम अन्तरिम केन्द्रीय सरकार में उद्योग और आपूर्ति मन्त्री बनाया। उन्होंने सिन्दरी उर्वरक कारखाना, भाखरा नांगल बाँध और भिलाई इस्पात उद्योग को स्वीकृति दी। 6 अप्रैल 1950 को डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने 1949 में पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री लियाकत अली खाँ से की गई दिल्ली सन्धि के विरोध में मन्त्रिमण्डल से इस्तीफा दे दिया। वे पूर्वी

पाकिस्तान से आनेवाले लाखों हिन्दू शरणार्थियों की शोकान्तिका के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार मानते थे और उन शरणार्थियों पर राज्य सत्ता समर्थित अत्याचार के विरुद्ध प्रबलता से खड़े हुए। संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूजनीय श्री गुरुजी (श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) से परामर्श कर डा० मुखर्जी ने 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना की और सर्वसम्मति से उसके पहले अध्यक्ष चुने गए । भारतीय राष्ट्रध्वज की सम्प्रभुत्ता कश्मीर में स्थापित करने के प्रयास में उन्होंने मई 1953 में कश्मीर में बिना परमिट प्रवेश करने की घोषणा की और एक निशान, एक विधान, एक प्रधान की माँग को लेकर कश्मीर में प्रवेश किया 11 मई 1953 को लखनपुर में शेख अब्दुल्ला की सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और श्रीनगर की एक जेल में काराबद्ध रखा। जहाँ 23 जून 1953 को उनकी रहस्यमयी परिस्थितियों में मृत्यु हो गई । दुर्भाग्य से उनकी मृत्यु की कोई भी जॉच नहीं की गई ।

भारत माता की जय

समर्पण दिवस
(25 सितम्बर)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय
25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चिन्तक और संगठनकर्ता थे। वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद नामक विचारधारा दी। वे एक समावेशित विचारधारा के समर्थक थे जो एक मजबूत और सशक्त भारत चाहते थे। राजनीति के अतिरिक्त साहित्य में भी उनकी गहरी अभिरुचि थी। उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में कई लेख लिखे जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

कष्टमय बचपन और मेधावी छात्र जीवन

दीनदयाल उपाध्याय का बचपन एक सामान्य उत्तर भारतीय निम्न मध्यम वर्गीय रानातनी हिन्दू वातावरण में बीता। ब्रजभूमि के मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान ग्राम में दीनदयाल उपाध्याय के प्रपितामह विख्यात ज्योतिषी पंडित हरिराम उपाध्याय रहा करते थे। श्री झण्डू राम उनके सहोदर अनुज थे। पंडित हरीराम उपाध्याय के तीन पुत्र थे-भूदेव, रामप्रसाद तथा राम प्यारे द्यझण्डू राभ जी के भी दो लड़के थे-शंकरलाल और वंशी लाल श्री रामप्रसाद के पुत्र थे श्री भगवती प्रसाद। श्री भगवती प्रसाद का विवाह श्रीमती रामप्यारी से हुआ था। वे बहुत धर्मपरायण महिला थी। आश्विन कृष्ण त्रयोदशी संवत् 1973 दिनांक 25 सितम्बर

1976 को श्री भगवती प्रसाद के घर में पुत्र जन्म हुआ। तब श्रीमती रामप्यारी अपने पिता श्री चुन्नीलाल शुक्ल के पास धनकिया में थी। उनके पिता धनकिया राजस्थान में स्टेशन मास्टर थे। बालक का पूरा नाम दीनदयाल व पुकारने का नाम दीना रखा गया।

मृत्यु दर्शन

मृत्यु का दर्शन जीवित जनों में वैराग्य उत्पन्न करता है। दीनदयाल उपाध्याय को बचपन में ही प्रियजनों की मृत्यु का धनीभूत अनुभव प्राप्त हुआ ढ़ाइ साल की अवस्था में दीनदयाल अपने नाना के पास आए ही थे कि कछ ही दिनों में समाचार आया उनके पिता भगवती प्रसाद का देहांत हो गया है। दीनदयाल पितृहीन हो गए और रामप्यारी विधवा हो गई। दीनदयाल की शिशु आखों ने टुकुर-टुकुर अपनी विधवा मां की गोद व आंसुओं को तथा दामाद विहीन नाना के बेबस और उदास चेहरे को देखा निश्चय ही बाल मन ने अबोध पर संवेदनशील अनुभव ग्रहण किया होगा। पितृहीन शिशु दीनदयाल मां की गोद में बाल्यावस्था को प्राप्त हुए। पर विधवा शोकाकल व चिंताकुल रामप्यारी पीड़ा और अपोषण का शिकार होकर, क्षय रोग ग्रस्त हो गई। उन दिनों क्षय रोग का अर्थ था निश्चित मृत्यु। अभी दीनदयाल सात वर्ष के तथा शिवदयाल पांच वर्ष के ही हुए थे कि दोनों बच्चों को नाना की गोद में छोड़कर रामप्यारी वास्तव में राम को प्यारी हो गई दीनदयाल पिता और माता दोनों की स्नेह छाया से वंचित हो गये। शायद नियति इस बालक को मृत्यु को सर्वागतः दर्शन करवाने पर तुली हुई थी। मां के देहांत को अभी दो ही वर्ष हुए थे वृद्ध व स्नेही पालक जो अपनी बेटी की अमानत को पाल रहे थे। नाना चुन्नीलाल भी स्वर्ग सिधार गये । यह 1926 का सितंबर माह था। दीनदयाल अपनी आयु के 10 वें वर्ष में थे। पिता माता व नाना के वात्सल्य से वंचित होकर वे अब अपने मामा के आश्रय पर पलने लगे ।

आर.एस.एस. के साथ उनका सम्बन्ध

दीनदयाल उपाध्याय अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही समाज सेवा के प्रति अत्यधिक समर्पित थे । वर्ष 1937 में अपने कॉलेज के दिनों में वे कानपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के साथ जुड़े वहां उन्होंने आर.एस.एस. के संस्थापक डा० हेडगेवार से बातचीत की और संगठन के प्रति पूरी तरह से अपने आपको समर्पित कर दिया । वर्ष 1942 में कालेज की शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने न तो नौकरी के लिए प्रयास किया और न ही विवाह का, बल्कि वे संघ की शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आर.एस.एस. के 40 दिवसीय शिविर में भाग लेने नागपुर चले गए।

जनसंघ के साथ उनका सम्बन्ध

भारतीय जनसंघ की स्थापना डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा वर्ष 1951 में किया गया एवं दीनदयाल उपाध्याय को प्रथम महासचिव नियुक्त किया गया वे लगातार दिसंबर 1967 तक जनसंघ के महासचिव बने रहे। उनकी कार्यक्षमता, खुफिया गतिधियों और परिपूर्णता के गुणों से प्रभावित होकर डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी उनके लिए गर्व से सम्मानपूर्वक कहते थे कि- 'यदि मेरे पास दो दीनदयाल हों, तो मैं भारत का राजनीतिक चेहरा बदल सकता हूं' परंतु अचानक वर्ष 1953 में डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के असमय निधन से पूरे संगठन की जिम्मेदारी दीनदयाल उपाध्याय के युवा कंधों पर आ गयी इस प्रकार उन्होंने लगभग 15 वर्षों तक महासचिव के रूप में जनसंघ की सेवा की भारतीय जनसंघ के 14 वें वार्षिक अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय को दिसंबर 1967 में कालीकट में जनसंघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

एक लेखक के रूप में

दीनदयाल उपाध्याय के अन्दर की पत्रकारिता तब प्रकट हुई जब उन्होंने लखनऊ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'राष्ट्रधर्म' में वर्ष 1940 के दशक में कार्य किया। अपने आर.एस.एस. के कार्यकाल के दौरान उन्होंने एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'पांचजन्य' और एक दैनिक समाचार पत्र 'स्वदेश' शुरू किया था उन्होंने नाटक 'चंद्रगुप्त मौर्य' और हिन्दी में शंकराचार्य की जीवनी लिखी। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा० के.बी. हेडगेवार की जीवनी का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया उनकी अन्य प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों में 'सम्राट चंद्रगुप्त', 'जगतगुरू शंकराचार्य', 'अखंड भारत क्यों हैं', 'राष्ट्र जीवन की समस्याएं', 'राष्ट्र चिंतन' और 'राष्ट्र जीवन की दिशा' आदि हैं।

मानववाद के प्रणेता

पूरा नाम : दीनदयाल उपाध्याय

जन्म : सोमवार 25 सितम्बर, 1916 धाणक्या

पैतृक स्थान : नगला चन्द्रभान, मथुरा, उत्तर प्रदेश

माता-पिता : श्रीमती रामप्यारी, श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय

1935 : मैट्रिक की राज्य स्तर की परीक्षा में प्रथम सीकर (राजस्थान)।

1937 : इंटरमीडिएट, बिड़ला कहलेज, पिलानी, में राज्यभर,राजस्थान सभी विषयों में विशेष योग्यता का।

1938 : 14 जनवरी-मकर संक्रांति पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश राष्ट्रसेवा का प्रण एवं कानपुर में सनातन धर्म कालेज से बी. ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

1939 : सेंट जोन्स कह्लेज, आगरा में एम.ए. (अंग्रेजी) प्रथम वर्ष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

1940 : राज्य प्रशासन को प्रतियोगी परीक्षा में सर्वोच्च स्थान, किन्तु नौकरी नहीं की।

1942 : प्रयाग से बी.टी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, लखीमपुर में संघ के प्रचारक नियुक्त।

1946–47 : सम्राट चंद्रगुप्त और जगद्गुरु शंकराचार्य कृति की रचना।

1947 : राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड' की स्थापना (जिसके अंतर्गत, राष्ट्रधर्म। पाञ्चजन्य एवं स्वदेश का प्रकाशन प्रारंभ।

1952 : कानपुर में भारतीय जनसंघ के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन में राष्ट्रीय महामंत्री नियुक्त दिसं–इस पद पर 5 वर्ष रहे।

1963 : विदेश यात्राओं द्वारा जनसंघ का प्रचार प्रसार।

1964 : जनसंघ के ग्वालियर अधिवेशन में नवीन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दर्शन 'एकात्म मानववाद' विचारार्थ प्रस्तुत किया।

1965 : जनसंघ के विजयवाड़ा अधिवेशन में ' एकात्म मानववाद' की विवेचना प्रस्तुत की, मुंबई में एकात्म मानववाद पर प्रसिद्ध व्याख्यान।

1967 : दिसंबर–भारतीय जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में अध्यक्ष पद ग्रहण किया।

निर्वाण : 11 फरवरी 1968 मुगलसराय रेलवे स्टेशन के पास संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु।

भारत माता की जय

खेल दिवस
(24 अक्तूबर)

पंडित प्रेमनाथ डोगरा
24 अक्तूबर 1884 – 21 मार्च 1972

पंड़ित जी का जन्म जम्मू से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित समेलपुर के एक सम्मनित ब्राह्मण परिवार में हुआ था। श्री शाम लाल शर्मा पंड़ित जी के करीबी सहयोगी द्वारा लिखित पुस्तिका के अनुसार पंड़ित जी (एक महान आत्मा) का जन्म 24 अक्तूबर 1884 को हुआ था। उनकी माता जी का देहांत तब हुआ था जब वह छोटे बच्चे थे और तब उनका पालन-पोषन उनकी नानी ने किया था। महाराजा हरि सिंह सरकार में वरिष्ठ अधिकारी श्री अनंत राम महाराजा ध्यान सिंह के महल में रह रहे थे। युवा बच्चे को लाहौर के पीर मिट्ठा स्कूल और बाद में मॉडल स्कूल में भर्ती कराया गया था। 1904 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्हें ''फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज'' में भर्ती कराया गया। कॉलेज में युवा डोगरा एक विख्यात चरित्र के रूप में उभरे। उन्होंने विभिन्न खेलों में विशेष रूप से फुटबाल में अत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वह न केवल छात्रों में बल्कि कॉलेज के वरिष्ठ शिक्षकों में भी लोकप्रिय थे। पत्रिका / बुकलैट ने डोगरा युवा की लोकप्रियता के संदर्भ में भी जानकारी दी है। 1908 में स्नातक की पढ़ाई पूरी करने पर एवं कई उपलब्धियों और पुरस्कारों के साथ जम्मू वापस लौट आए। जम्मू के तत्कालीन ''सैटलमैंट आयुक्त'' श्री तलवर्ट ने 1909 में प्रशिक्षण के लिए युवा डोगरा को

तहसीलदार अखनूर नियुक्त किया।

लाहौर विद्यालय से स्नातक परीक्षा

1910 में वह उधमपुर में ''सहायक बंदोबस्त अधिकारी'' के पद तैनात थे और फिर 1912 में मुँसिफ की विशेष शक्तियों के साथ उन्हें जम्मू में नियुक्त किया गया। 1913 में श्री डोगरा को सचिव ''गवर्नर कश्मीर'' और बाद में वजीर-वज़रात (डी-सी-), मीरपुर नियुक्त किया गया।

खिलाड़ी

पंड़ित डागरा एक महान खिलाड़ी थे। लाहौर में अपने कॉलेज के समय में उन्होंने दौड़, फुटबॉल और यहाँ तक की हॉकी में भी अपना सर्वश्रेषठ प्रदर्शन किया।

1907 में अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात जब युवा डोगरा जी, जम्मू वापस लौटे तो, जम्मू के पूर्व गवर्नर स्वर्गीय श्री चेत राम चोपरा के अनुसार, पंड़ित डोगरा जी ने एक पूरा बैग (थैला) पुरस्कारों और प्रमाणपत्रों से भरा हुआ अपने साथ लाए। यहाँ तक कि जब उनकी आयु 80 से अधिक परंतु 90 से भी कम थी तब भी वह खेलों से जुड़े कई कार्यक्रमों में भाग लेते थे और कबड्डी में भी बहुत रूची लेते थे, जो उन दोनों में एक सामान्य खेल था, ताकि खिलाड़ी प्रोत्साहित होते रहें।

पंड़ित प्रेम नाथ डोगरा जी वज़ीर-ए-वज़ारत 1931- डी.सी.

महाराजा प्रताप सिंह के निधन के पश्चात, उन्होंने महाराजा हरि सिंह के रहते हुए भी राजस्व विभाग में महत्वपूर्ण पदों पर रहे। सत्ता की बागड़ौर संभाली। अपनी पुस्तिका में श्री शर्मा जी ने पंड़ित जी की मुस्लिमों में भी लोकप्रियता का वर्णन किया है। जब वह मुज़फराबाद में वज़ीर - वज़रात (डी. सी.) के रूप में स्थानांतरित थे। धाटी में उन दिनों शेख द्वारा संचालित मुस्लिम-कॉफ्रेंस ने सांप्रदायिक उपद्रव उत्पन्न कर दिए थे। जिनके

परिणामस्वरूप बड़ी हिंसा हुई थी। महाराज के वर्गीकरण में कुछ व्यक्तियों ने मूसलमानों के बीच श्री डोगरा की लोकप्रियता से जलन महसूस की थी। उन पर महाराजा के विरूद्ध आंदोलन करने वालों के प्रति नरमी बरतनें की साजिश रचने के आरोप लगे थे। इसलिए जब वह महज 50 वर्षों के थे तो उन्हें 1932 में समय से पूर्व ही सेवानिवृत कर दिया गया था।

सद्‌गुणों के लिल दंड़ित किया गया श्री दुर्गा दास डोगरा (अधिवक्ता) एवं भारतीय जनसंघ के कमर्ठ कार्यकर्ता ने पंड़ित जी की असामाजिक सेवानिवृत से संबंधित घटनाओं का वर्णन किया है। महाराजा के कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्तियों, जिनमें महाराजा के एक घनिष्ट मंत्री भी सम्मिलित है, को इर्ष्या थी कि कश्मीर के अन्य हिस्सों के विपरीत, पंड़ित प्रेम नाथ डोगरा जी के अधीन प्रशासन में कोई भी हिंसा नहीं हुई थी। ईर्ष्यालु व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न किए गए संदेह पर, महाराजा के इशारे पर रियासत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने मुज़फ़राबाद का दौरा किया जहां पर असंख्य लोगों ने ''पंडित प्रेम नाथ डोगरा जिंदाबाद'' के नारे लगाए। इसने भी प्रधानमंत्री जी को नाराज कर दिया। महाराजा और पंडित जी के बीच नाराजगी उत्पन्न करने के लिए पंडित जी के विरूद्ध झूठे आरोप लगाए गए। महराजा हरिसिंह के आदेश संख्या A/57/W के बिक्रमी संबत 1988–1989 (18 जुलाई 1932) के आधार पर पंड़ित डोगरा जी को समय से पूर्व सेवानिवृत कर दिया। मुज़फ़राबाद के लोग जो पंडित जी को अपने दिलों की अधाह गहराइयों से प्यार करते थे वह नाराज हो गए और आक्रोश से भर गए। 6 सितंबर 1932 को नागीन बाग श्रीनगर में एक बड़ी सभा ने इस शाही आदेश की निंदा की और एक कश्मीरी कवि जनबा अबदुजाफ़र कश्मीरी ने अपनी आहत भावनाओं को उर्दू में व्यक्त किया जिनका बाद में हिंदी अनुवाद किया गया।

महान डोगरा

श्री प्रेमनाथ डोगरा जी को लोकप्रिय रूप से पंडित जी के नाम से जाना जाता था। वह अत्याधिक प्रसिद्ध और श्रेष्ठ व्यक्ति थे।

एक अनुभवी पत्रकार श्री गोपाल सच्चर जिन्होने पंडित जी के कुशल प्रबंधन में 1950 से 1972 तक विभिन्न पदों पर कार्य किया जिसमें वे प्रजा-परिषद, प्रदेश भारतीय जन संघ के प्रकाशन विभाग के प्रभारी, पार्टी के अधिकारिक विभाग यथाः-जय स्वदेश, स्वदेश और दीपक के संपादक के रूप में कार्यरत रहे। यहाँ उन्होंने अनुभव किया कि भारत की इस महान रियासत जम्मू-व-कश्मीर की नींव महाराजा गुलाब सिंह जी ने रखी थी। परंतु यह पंड़ित प्रेमनाथ ड़ोगरा ही थे जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से इस राज्य को भारत का अभिन्न अंग बनानें में बड़ी भूमिका निभाई। इतना ही नहीं उन्होंने इस रियासत और शेष देश के मध्य अविभाज्य वाधाओं को दूर करने के लिए प्रयास किए।

भारत माता की जय

सुशासन दिवस
(25 दिसम्बर)

अटल बिहारी वाजपेयी
25 दिसम्बर 1924 – 16 अगस्त 2018

प्रस्तावनाः पूर्व प्रधानमंत्री और 'भारतरत्न' अटल बिहारी वाजपेयी देश के एकमात्र ऐसे राजनेता थे, जो 4 राज्यों के 6 लोकसभा क्षेत्रों की नुमाइंदगी कर चुके थे। उत्तरप्रदेश के लखनऊ और बलरामपुर, गुजरात के गांधीनगर, मध्यप्रदेश के ग्वालियर और विदिशा और दिल्ली की नई दिल्ली संसदीय सीट से चुनाव जीतने वाले वाजपेयी इकलौते नेता हैं।

जन्म व शिक्षाः अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को हुआ, इस दिन को भारत में 'बड़ा दिन' कहा जाता है। उनके पिता पंडित कृष्णबिहारी वाजपेयी अध्यापन का कार्य करते थे और माता कृष्णादेवी घरेलू महिला थीं।

अटलजी अपने माता-पिता की 7वीं संतान थे। उनसे बड़े 3 भाई और 3 बहनें थीं। अटलजी के बड़े भाइयों को अवध बिहारी वाजपेयी, सदा बिहारी वाजपेयी तथा प्रेम बिहारी वाजपेयी के नाम से जाना जाता है।

अटलजी बचपन से ही अंतर्मुखी और प्रतिभा संपन्न थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिक्षा मंदिर, गोरखी, बाड़ा, विद्यालय में हुई। यहां से उन्होंने 8वीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की। जब वे 5वीं कक्षा में थे, तब उन्होंने प्रथम बार भाषण दिया था। उन्हें विक्टोरिया कॉलेज में दाखिल कराया गया, जहां से

उन्होंने इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की।

राजनीतिक जीवन

वाजपेयी 1942 में राजनीति में उस समय आए, जब भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनके भाई 23 दिनों के लिए जेल गए। 1951 में आर.एस.एस. के सहयोग से भारतीय जनसंघ पार्टी का गठन हुआ तो श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे नेताओं के साथ अटलबिहारी वाजपेयी की अहम भूमिका रही।

वर्ष 1952 में अटल बिहारी वाजपेयी ने पहली बार लखनऊ लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा, पर सफलता नहीं मिली। वे उत्तरप्रदेश की एक लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में उतरे थे, जहां उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। अटल बिहारी वाजपेयी को पहली बार सफलता 1957 में मिली थी। 1957 में जनसंघ ने उन्हें 3 लोकसभा सीटों- लखनऊ, मथुरा और बलरामपुर से चुनाव लड़ाया। लखनऊ में वे चुनाव हार गए, मथुरा में उनकी जमानत जब्त हो गई, लेकिन बलरामपुर संसदीय सीट से चुनाव जीतकर वे लोकसभा में पहुंचे।

वाजपेयी के असाधारण व्यक्तित्व को देखकर उस समय के वर्तमान प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि आने वाले दिनों में यह व्यक्ति जरूर प्रधानमंत्री बनेगा। वाजपेयी तीसरे लोकसभा चुनाव 1962 में लखनऊ सीट से उतरे, लेकिन उन्हें जीत नहीं मिल सकी। इसके बाद वे राज्यसभा सदस्य चुने गए। बाद में 1967 में फिर लोकसभा चुनाव लड़े, लेकिन जीत नहीं सके। इसके बाद 1967 में ही उपचुनाव हुआ, जहां से वे जीतकर सांसद बने। इसके बाद 1968 में वाजपेयी जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। उस समय पार्टी के साथ नानाजी देशमुख, बलराज मधोक तथा लालकृष्ण आडवाणी जैसे नेता थे। 1971 में 5वें लोकसभा चुनाव में अटल बिहारी वाजपेयी मध्यप्रदेश के ग्वालियर संसदीय सीट से चुनाव में उतरे और जीतकर संसद पहुंचे।

आपातकाल के बाद हुए चुनाव में 1977 और फिर 1980 के मध्यावधि चुनाव में उन्होंने नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

1984 में अटलजी ने मध्यप्रदेश के ग्वालियर से लोकसभा चुनाव का पर्चा दाखिल कर दिया और उनके खिलाफ अचानक कांग्रेस ने माधवराव सिंधिया को खड़ा कर दिया जबकि माधवराव गुना संसदीय क्षेत्र से चुनकर आते थे। सिंधिया से वाजपेयी पौने 2 लाख वोटों से हार गए।

वाजपेयीजी ने एक बार जिक्र भी किया था कि उन्होंने स्वयं संसद के गलियारे में माधवराव से पूछा था कि वे ग्वालियर से तो चुनाव नहीं लड़ेंगे? माधवराव ने उस समय मना कर दिया था, लेकिन कांग्रेस की रणनीति के तहत अचानक उनका पर्चा दाखिल करा दिया गया। इस तरह वाजपेयी के पास मौका ही नहीं बचा कि वे दूसरी जगह से नामांकन दाखिल कर पाते। ऐसे में उन्हें सिंधिया से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद वाजपेयी 1991 के आम चुनाव में लखनऊ और मध्यप्रदेश की विदिशा सीट से चुनाव लड़े और दोनों ही जगहों से जीते। बाद में उन्होंने विदिशा सीट छोड़ दी।

आपातकाल के बाद 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी की जीत हुई थी और वे मोरारजी भाई देसाई के नेतृत्व वाली सरकार में विदेश मामलों के मंत्री बने। विदेश मंत्री बनने के बाद वाजपेयी पहले ऐसे नेता थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासंघ को हिन्दी भाषा में संबोधित किया। इसके बाद जनता पार्टी अंतरकलह के कारण बिखर गई और 1980 में वाजपेयी के साथ पुराने दोस्त भी जनता पार्टी छोड़ भारतीय जनता पार्टी से जुड़ गए।

वाजपेयी भाजपा के पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष बने और वे कांग्रेस सरकार के सबसे बड़े आलोचकों में शुमार किए जाने लगे।

1994 में कर्नाटक तथा 1995 में गुजरात और महाराष्ट्र में पार्टी जब चुनाव जीत गई, तो उसके बाद पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया था।

वाजपेयीजी 1996 से लेकर 2004 तक 3 बार प्रधानमंत्री बने। 1996 के लोकसभा चुनाव में भाजपा देश की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और वाजपेयी पहली बार प्रधानमंत्री बने, हालांकि उनकी सरकार 13 दिनों में संसद में पूर्ण बहुमत हासिल नहीं करने के चलते गिर गई।

1998 के दोबारा लोकसभा चुनाव में पार्टी को ज्यादा सीटें मिलीं और कुछ अन्य पार्टियों के सहयोग से वाजपेयीजी ने एनडीए का गठन किया और वे फिर प्रधानमंत्री बने। यह सरकार 13 महीनों तक चली, लेकिन बीच में ही जयललिता की पार्टी ने सरकार का साथ छोड़ दिया जिसके चलते सरकार गिर गई।

1999 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर से सत्ता में आई और वे इस पद पर 2004 तक बने रहे। इस बार वाजपेयीजी ने अपना कार्यकाल पूरा किया। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी लंबे समय से बीमार रहने के कारण अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान यानी एम्स में भर्ती रहे, जहां उनका लंबा इलाज चला और 16 अगस्त 2018 को 93 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया।

भारत माता की जय